15 अगस्त, 2018 के अवसर पर कुलपति प्रो. अशोक कुमार सरयाल जी का सम्बोधन

- स्वतन्त्रता दिवस समारोह के इस पावन अवसर पर आप सबको मेरी ओर से बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।
- विश्वविद्यालय के संविधिक अधिकारीगण, विभागाध्यक्ष, विद्यालय परिसर एवं बाहरी केन्द्रों के शिक्षक, गैर–शिक्षक कर्मचारी वर्ग, अतिथिगण तथा मेरे प्रिय विद्यार्थीगण !
- 15 अगस्त 1947 स्वतन्त्रता संग्राम का वह दिन था जब भारत को ब्रिटिश राज से आजादी मिली और इस प्रकार एक नए युग की शुरूआत हुई, जब भारत एक मुक्त राष्ट्र के रूप में उभरा। स्वतन्त्रता दिवस के दिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र भारत के जन्म का आयोजन किया जाता है और भारतीय इतिहास में इस दिन का अत्यन्त महत्व है।
- भारतीय स्वतन्त्रता के संर्घष में अनेक अध्याय जुड़े हैं जिनमें 1857 की क्रान्ति से लेकर जलियांवाला बाग नरसंहार, असहयोग अन्दोलन से लेकर नमक सत्याग्रह तक शामिल हैं। अग्रेजों से आजादी पाना भारत के लिए आसान नहीं था लेकिन कई महान पुरूषों और स्वतन्त्रता सेनानियों ने इसे सच कर दिखाया। अपने सुख व आराम की चिंता किये बगैर उन्होंने भावी पीढ़ी यानि हम और आप की आजादी के लिए अपना जीवन बलिदान तक कर दिया।
- यह दिन हमारी आजादी का जश्न मनाने और सभी शहीदों को श्रद्धांजली देने का अवसर है, जिन्होंने इस महान कार्य के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। स्वतन्त्रता दिवस पर प्रत्येक सच्चे भारतीय के मन में राष्ट्रीयता, भाईचारे और निष्ठा की भावना भर जाती है।
- स्वतन्त्रता दिवस का प्रतीक है 'नई दिल्ली का लाल किला' जहां हर वर्ष स्वतन्त्रता दिवस पर भारतीय प्रधानमन्त्री झंडा फहराते हैं, लेकिन 15 अगस्त 1947 को ऐसा नहीं हुआ था।
- लोक सभा सचिवालय के एक शोध पत्र के अनुसार भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने 16 अगस्त 1947 को लाल किले से झंडा फहराया था क्योंकि 15 अगस्त 1947 की आधी रात को भारत ने ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाई थी।
- 15 अगस्त का यह दिन भारत के आलावा तीन अन्य देशों का भी स्वतन्त्रता दिवस है। दक्षिण कोरिया इसी दिन 1945 को जापान से आजाद हुआ था। बहरीन इसी दिन 1971 को ब्रिटेन से और कांगो 15 अगस्त 1960 को फ्रांस से आजाद हुआ था।
- किसी भी देश के लिए उसके भविष्य के सफर पर इतिहास का असर साफ झलकता है। इस वजह से यह जरूरी है कि मौजूदा पीढ़ी को पूर्वजों के बलिदान की जानकारी हो। उनके प्रति आदर हो। ऐसे में इस दिन से बेहतर और क्या हो सकता है जब उन्हें बताया जाए कि स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों ने किन–किन

परेशानियों का सामना किया और देश को आजाद कराया। मौजूदा पीढ़ी के लिए यह दिन काफी महत्वपूर्ण है ताकि वह इतिहास पर चर्चा कर सकें और इसे समझ सकें।

- 15 अगस्त का महत्व हमारे जीवन में और भी बढ़ गया है। देश की सीमाओं के भीतर और बाहर कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- भारतवर्ष और तिरंगा केवल आयोजन ही नहीं है बल्कि आज की युवा पीढ़ी जब तक आजादी के मूल्य को नहीं समझेगी तब तक ऐसे आयोजनों का कोई मतलब नहीं रह जाता।
- आज के युवाओं की जिम्मेदारी है कि वे 1947 की उस जादुई रात की भावना को महसूस करें और स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के बताए रास्तों पर चल कर आगे बढ़ें।
- स्वतन्त्रता के कारण ही आज हम इस बात का गर्व महसूस कर रहे हैं कि भारत दुनिया की एक विश्व शक्ति के रूप में उभर कर आया है।
- कृषि क्षेत्र में आज हमारा देश खाद्यान्न में न केवल आत्मनिर्भर है बल्कि बासमती चावल, गेहूं व मक्का इत्यादि में 65 हजार करोड़ रूपये का सालाना निर्यात भी कर रहा है। बासमती में तो 25000 हजार से 30,000 करोड़ रूपये का विदेशी व्यापार कर भारत दुनिया का अग्रणी देश बन गया है। इसका श्रेय समय–समय की सरकारों, नीति निर्धारकों, कृषि वैज्ञानिकों व मेहनतकश किसानों को जाता है।
- हरित क्रान्ति के बाद समय–समय पर देश तथा प्रदेश की सरकारों ने कृषि विकास व कृषि शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। स्वतन्त्रता के बाद एक ऐतिहासिक फैसले के अन्तर्गत वर्ष 2004 में राष्ट्रीय किसान आयोग का गठन किया गया ताकि खेती युवा पीढ़ी के लिए एक लाभदायक उद्यम सिद्ध हो सके। युवाओं को खेती की ओर आकर्षित करने के लिए आयोग ने अनुशंसा की है कि प्रयास ऐसे होने चाहिए कि हर कृषक परिवार में एक कृषक स्नातक हो। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कई अन्य अनुशंसाएं भी दी। आयोग की रिपोर्ट के अनुरूप ही माननीय प्रधानमन्त्री जी ने वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य रखा है जिस पर केन्द्र तथा राज्य सरकारें जोर शोर से कार्य कर रही है।
- भारत सरकार के कृषि मन्त्रालय का नाम अब ''कृषि व कृषक कल्याण मन्त्रालय'' रखा गया है। प्रधानमन्त्री कृषि सिंचाई योजना के तहत बजट में 50,000 करोड़ रू. का आबंटन किया गया है।
- देशी गाय पालन को प्रोत्साहित करने के लिए गोकुल मिशन चलाया गया है। सभी कृषि मण्डियों को समीप लाने के लिए 'इलैक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि मण्डी' किसानों की सहायता कर रही है। अधिक रोजगार सृजन के लिए मिश्रित फार्मिन्ग के अन्तर्गत डेयरी, कुक्कुट् पालन, शहद उत्पादन, मशरूम उत्पादन, बांस उत्पादन, केंचुआ खाद उत्पादन तथा कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण को प्रोत्साहित किया जा रहा है। खरीफ 2018 के बाद एक अधिसूचना के अनुसार अब कृषि उत्पादों का न्यूनतम अधिसूचित मूल्य अब लागत मूल्य का कम से कम 150 प्रतिशत होगा। किसानों सहित देश के

सभी नागरिकों के स्वास्थ्य के मद्देनजर अब सरकार ने 'राष्ट्रीय सन्तुलित पोषाहार मिशन' के लिए बजट में 9000 करोड़ रू. का प्रावधान रखा है।

- हिमाचल प्रदेश की बात करें तो खाद्यान्न उत्पादन जो यहां वर्ष 1950 में मात्रा 1.99 लाख मीट्रिक टन था, आज कुल उत्पादन 16 लाख मीट्रिक टन से अधिक पहुंच चुका है।
- प्रदेश में 81 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि वर्षाश्रित है जहां बागवानी सहित मुख्य फसलों की पैदावार विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध वर्षा की मात्रा पर ही निर्भर करती है। इन क्षेत्रों में जहां आवश्यकता से अधिक लगभग 80 प्रतिशत वर्षा मानसून के दौरान होती है। वर्ष के अन्य समय में मात्र 20 प्रतिशत वर्षा ही होती है जिससे कृषि योग्य भूमि में पर्याप्त नमी बरकरार नहीं रहती है।
- कृषि तथा बागवानी क्षेत्र पर वर्तमान सरकार ने विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। केन्द्र व प्रदेश सरकार ने किसानों की बेहतरी व फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेक योजनाएं प्रारम्भ की हैं। इनमें जहां सिंचाई, सूक्ष्म सिंचाई, मिट्टी की जांच के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड जैसी कई योजनाएं शामिल हैं, वहीं प्रधानमन्त्री फसल बीमा योजना भी शुरू की गई है। वर्तमान की मुख्यमन्त्री श्री जयराम ठाकुर जी की सरकार ने सिंचाई सुविधाओं की ओर विशेष ध्यान दिया है। 4751 करोड़ रू. की नई सिंचाई परियोजना को हाल ही में केन्द्र सरकार ने स्वीकृति दी है।
- इस सन्दर्भ में मुझे मार्च 2017 में पहली बार प्रदेश योजना बोर्ड में विचार रखने का अवसर मिला। आजादी से लेकर हिमाचल प्रदेश की स्थापना और वर्तमान तक 70 वर्षों के लम्बे अन्राल में सिंचाई सुविधाओं का अभाव रहा है जबकि देश की पांच मुख्य नदियों का हिमाचल प्रदेश से उद्गम होता है और ये नदियां पड़ौसी राज्य पंजाब, हरियाणा, राजस्थान की क्रमशः 98, 84 और 40 प्रतिशत खेती योग्य भूमि को सिंचित करती हैं। कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रयोगों से यह साबित कर दिखाया है कि सिंचित क्षेत्रों में विभिन्न फसलों की उत्पादकता तीन गुणा ज्यादा होती है। असिंचित क्षेत्र की तुलना में यदि प्रदेश की 5.54 लाख हैक्टेयर कृषि योग्य भूमि में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो जाए तो प्रदेश का खाद्यान्न उत्पादन तीन गुणा बढ़ाया जा सकता है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, प्रदेश सरकार में कार्यरत छात्र एवं मेहनतकश किसानों के सहयोग से इन लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम हैं।
- मार्च 2018 में प्रदेश को भारत सरकार द्वारा कृषि कर्मणन पुरूस्कार से चौथी बार सम्मानित करना प्रमाणित करता है कि यदि प्रदेश में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हो जाए तो वैज्ञानिक 50 लाख टन से भी अधिक खाद्यान्न उत्पादन करने की क्षमता रखते हैं। सिंचाई समस्या से निजात दिलाने के लिए गत सप्ताह ही प्रदेश मन्त्रीमण्डल की आयोजित बैठक में फैसला लिया है कि किसानों के लिए सौरउर्जा से संचालित पम्प लगाने के लिए राज्य में 224 करोड़ रू. की सौर सिंचाई योजना क्रियान्वित की जाएगी। योजना के तहत लघु एवं सीमान्त किसानों को 90 प्रतिशत वितिय सहायता प्रदान की जाएगी तथा मध्यम एवं बड़े किसानों को 80 प्रतिशत

उपदान प्रदान किया जाएगा। योजना के तहत 5850 कृषि सौर पंम्पिन्ग सैट किसानों को उपलब्ध करवाए जाएंगे।

- साथियो ! मुझे इस विश्वविद्यालय में आए हुए अभी दो ही वर्ष हुए हैं। तब से अब तक विश्वविद्यालय में आप सब के सहयोग से कई सुधार करके और संकाय की कड़ी मेहनत व मार्गदशर्न से अपने छात्रों को शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त हुई है।
- कर्मचारियों की कड़ी मेहनत के कारण विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार गत वर्ष 193 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की थी। कृषि महाविद्यालय के 15 छात्रों ने देश के विभिन्न संस्थानों में पी.एच. डी. में प्रवेष के लिए प्रतिष्ठित सीनियर रिसर्च फैलाशिप परीक्षा उतीर्ण की थी और राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का परिणाम 92.7 प्रतिशत रहा। ए.एस.आर.बी. की वर्ष 2017 की मुख्य परीक्षा में विश्वविद्यालय के 8 विद्यार्थियों का वैज्ञानिकों के पद के लिए चयन हुआ और यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे स्थान पर रहा।
- गत वर्ष 150 विद्यार्थियों ने रोजगार प्राप्त किया जिनमें से 96 विद्यार्थी कृषि विकास अधिकारी व पशुचिकित्सा अधिकारी चयनित हुए। इस वर्ष भी 36 पशुचिकित्सा अधिकारी चयनित हुए। एक छात्र का भारतीय सेना में भी चयन हुआ था।
- वर्ष 1978 में अपनी स्थापना के बाद यह पहला अवसर है कि जब मात्र दो वर्षों में विश्वविद्यालय के इतने अधिक छात्रों ने प्रतिष्ठित परीक्षाएं उतीर्ण की हैं।
- इस वर्ष पादप रोग विभाग की सुश्री निधि कुमारी, फसल सुधार विभाग से सुश्री अनीमा महतो व श्री देवेन्द्र कुमार कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल की परीक्षा उतीर्ण करने के बाद भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के सस्थानों में वैज्ञानिक नियुक्त हुए हैं।
- इस अवसर पर मैं विश्वविद्यालय के उन सभी छात्रों को भी बधाई देता हूं जिन्होंने इस वर्ष हाल ही में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता पाई है। कुछ परीक्षाएं जो 18–19 अगस्त को निर्धारित हैं के परिणाम आने अभी बाकि हैं।
- यह सब विश्वविद्यालय के उच्च शैक्षणिक वातावरण व कार्य–संस्कृति के फलस्वरूप यह सब सम्भव हो पाया जिसकी महामहिम कुलाधिपति ने भी सार्वजनिक तौर पर प्रशंसा की थी।
- इस वर्ष बी.वी.एस.सी व ए.एच. तथा बी.एस.सी.(आनर्स) कृषि की 152 सीटों के लिए सर्वाधिक इस वर्ष 17276 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था जो संख्या इन दोनों संकायों की लोकप्रियता व शिक्षा की गुणवत्ता दर्शाती है।
- अनुसन्धान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने गतवर्ष विभिन्न फसलों की 11 किस्में किसानों के लिए जारी की और लगभग 1150 क्विंटल बीज उत्पादित किया।
- शून्य लागत प्राकृतिक खेती के अभियान को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए गए जिन्हें इस वर्ष और अधिक सुदृढ़ किया जाएगा। किसानों की आय वर्ष 2022 तक दोगुनी करने के लिए 20 मॉडल विकसित किए गए। गत वर्ष विश्वविद्यालय में

सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के सहयोग से अनेक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

- इसी वर्ष 29 जनवरी को माननीय राज्यपाल महोदय व माननीय मुख्यमन्त्री जी ने मॉडल प्राकृतिक खेती सेन्टर की आधारशीला इस विश्वविद्यालय में रखी है। इससे प्राकृतिक खेती पर शोध को गति मिलेगी। इसके लिए सरकार ने विश्वविद्यालय को 3 करोड़ की एक अनुसन्धान परियोजना स्वीकृत की है। हमने अपने जैविक कृषि विभाग का नाम भी 'प्राकृतिक खेती एवं जैविक कृषि विभाग' कर दिया है।
- तकनीकी विस्तार में विश्वविद्यालय का प्रसार शिक्षा निदेशालय और कृषि विज्ञान केन्द्र विशेष महत्व रखते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र सुन्दरनगर को इस बार भारत सरकार के कृषि मन्त्रालय के प्रथम जोनल पुरूस्कार से सम्मानित करना विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है।
- निरन्तर सेवा निवृति से विषय विशेषज्ञों की कमी पूरी करने के लिए लगभग 100 वैज्ञानिकों और इतने ही गैर शिक्षक कर्मचारियों को भरने की स्वीकृति सरकार से प्राप्त की गई है। विश्वविद्यालय में को–टर्मिनस आधार पर कार्यरत 35 शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारी नियमित करने के फैसला लिया गया है। 19 दैनिक भेगी कर्मचारी भी नियमित किए गए हैं।
- विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व प्रदेश के राज्यपाल नियमित रूप से अपना आशीर्वाद देते ही रहते हैं। प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री, कृषि मन्त्री, पशुपालन मन्त्री, कृषि सचिव व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक भी समय–समय पर आकर विश्वविद्यालय के कार्यों को देख गए हैं और प्रशंसा की है।
- आप सबके सहयोग से विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कर्मचारियों व पैंशनरों को समयबद्ध सभी देय भत्ते दिए जा रहे हैं।
- मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के ''राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग तन्त्र'' द्वारा चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर को देश के 75 राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों तथा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के डीम्ड विश्वविद्यालयों में रैंकिंग में 19वें स्थान पर आंका गया। जबकि प्रदेश के दूसरे बागवानी विश्वविद्यालय का रैंक 38वां आंका गया। विश्वविद्यालय के शैक्षणिक व गैर–शैक्षणिक कर्मचारियों और विद्यार्थियों के लिए यह गौरव का विषय है। इसके लिए मैं आप सब को बधाई देता हूं।
- वर्ष 2017 के नववर्ष के सम्बोधन में हम सभी शैक्षणिक व गैर–शैक्षणिक कर्मचारियों ने संकल्प लिया था कि हम विश्वविद्यालय के 'कार्य का सम्मान', 'कड़ी मेहनत' व 'उत्कृष्ट कार्यशैली की संस्कृति' का सृजन करेंगे। उपरोक्त उपलब्धियां इसी के फलस्वरूप प्राप्त हुई हैं।
- छात्र कल्याण संगठन द्वारा आयोजित आज के इस इस कार्यक्रम में एन.सी.सी. कैडेटों ने बढ़िया मार्च पास्ट किया। मैं इस मौके पर उन सबको भी बधाई देता हूं जिन्हें उत्कृष्ट मार्च पास्ट के लिए आज सम्मानित किया गया।

- पुरस्कार प्राप्त करने वाले एन.एन.एस. व एन.सी.सी. केडेटस को साधुवाद।
- आज के इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य, विद्यार्थी, छोटे बच्चे तथा अन्य सम्माननीय अतिथियों ने शामिल होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। बहुत अच्छा लगा। आगे के लिए भी इस तरह के कार्यक्रमों में आप सपरिवार भाग लेते रहें।
- मैं पुनः स्वतन्त्रता दिवस के इस शुभ अवसर पर आपका धन्यवाद करते हुए अपनी ओर से तथा विश्वविद्यालय की तरफ से आप सब को शुभ कामनाएं देता हूं।

जय हिन्द।

भारत माता की जय!